INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक संदेश: एक विश्लेषण

डॉ0 रंजीत कुमार

सहायक प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग

मधुपुर महाविद्यालय, मधुपुर

सारांश

मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) हिंदी साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने कथा साहित्य को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, अपितु सामाजिक यथार्थ के दर्पण और सुधार के अस्त्र के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह शोध-आलेख प्रेमचंद की कहानियों में अंतर्निहित सामाजिक संदेशों का अकादमिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखक के रूप में प्रेमचंद का विकास, उनकी वैचारिक यात्रा (गोखले से गांधी तक), तथा प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ाव इस अध्ययन के प्रारंभिक बिंदु हैं। तत्पश्चात, उनकी कहानियों में प्रतिबिंबित तीन प्रमुख सामाजिक संरचनाओं–जाति, पितृसत्ता और आर्थिक विषमता–का गहन विश्लेषण किया गया है। *सद्गति*, *कफ़न*, *ठाकुर का कुआँ*, *मंदिर*, *दो बैलों की कथा* और *ईदगाह* जैसी प्रतिनिधि कहानियों के पाठ-विश्लेषण के माध्यम से प्रेमचंद की कलात्मक चेतना पर प्रकाश डाला गया है। अंत में, दलित आलोचना के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के यथार्थवाद की सीमाओं पर विमर्श किया गया है। निष्कर्ष यह है कि प्रेमचंद की कहानियाँ यद्यपि सहानुभूति के 'पाठकीय समझौते' पर आधारित हैं, फिर भी उन्होंने उपेक्षितों की आवाज़ को साहित्य के केंद्र में लाकर सामाजिक चेतना के एक नए युग का सूत्रपात किया।

मुख्य शब्द: प्रेमचंद, सामाजिक यथार्थवाद, जाति, दलित चेतना, नारी अस्मिता, प्रगतिशील लेखक संघ, पाठकीय सहानुभूति

परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का स्थान केवल एक कहानीकार या उपन्यासकार का नहीं, बल्कि एक 'युग-प्रवर्तक' का है। उनसे पहले हिंदी कहानी रोमानी, आदर्शवादी और कल्पनाप्रधान होती थी, जिसमें राजा-रानियों, प्रेतात्माओं और रूमानी प्रेम की कथाएँ प्रमुख थीं-6। प्रेमचंद ने इस परंपरा को तोड़ते हुए कहानी को जमीन से जोड़ा, उसे किसान, मजदूर, दलित, विधवा और वेश्या जैसे 'साधारण' व्यक्तियों के जीवन-संघर्ष का माध्यम बनाया।

उनकी लेखनी ने साहित्य को समाज-सेवा का एक सशक्त अस्त्र बना दिया, जहाँ प्रत्येक कथा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि विचार का आंदोलन है।

यह अध्ययन प्रेमचंद की कहानियों में अंतर्निहित सामाजिक संदेशों का एक समग्र और विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। यह शोध इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास है कि प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किस सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन किया, उस यथार्थ के प्रति उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता क्या थी, और आज के संदर्भ में उनका सामाजिक संदेश किस प्रकार प्रासंगिक है। यह अध्ययन तीन स्तरों पर इस विश्लेषण को आगे बढ़ाता है: प्रथम, प्रेमचंद के वैचारिक विकास और सामाजिक यथार्थवाद के सिद्धांत को समझना; द्वितीय, उनकी प्रमुख कहानियों में जाति, पितृसत्ता और आर्थिक विषमता के चित्रण का विश्लेषण; तृतीय, दलित आलोचना के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद की सीमाओं का मूल्यांकन।

1. सामाजिक यथार्थवाद की नींव: प्रेमचंद का वैचारिक विकास

प्रेमचंद (मूल नाम धनपत राय) का जीवन और लेखन एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के एक कायस्थ परिवार में जन्मे प्रेमचंद ने मदरसे में उर्दू-फारसी और मिशनरी स्कूल में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की-1। यह द्विधारी शिक्षा उनके सांस्कृतिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में सहायक हुई। उनके लेखन की शुरुआत नवाब राय के नाम से *असरार-ए-माबिद* (ईश्वर के निवास के रहस्य) जैसी कहानियों से हुई, जिसमें पुजारियों द्वारा महिलाओं के यौन शोषण का चित्रण था-1। इस कृति ने ही उनकी लेखन-शैली की दिशा तय कर दी–सामाजिक बुराइयों का बेबाक खुलासा।

प्रेमचंद के वैचारिक विकास को तीन चरणों में देखा जा सकता है। प्रारंभिक चरण में गोपाल कृष्ण गोखले और बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेताओं का प्रभाव रहा-6। इस दौर में उन्होंने *सोज़-ए-वतन* (देश की व्यथा) जैसी कहानियाँ लिखीं, जिनमें देशभक्ति के स्वर मुखर थे। अंग्रेजी सरकार ने इस पुस्तक को जब्त करके जला दिया था–एक ऐसी घटना जिसने प्रेमचंद के प्रतिरोध की भावना को और गहरा कर दिया-9।

द्वितीय चरण गांधीवादी प्रभाव का है। 1920 के दशक में प्रेमचंद गांधी के असहयोग आंदोलन और सामाजिक सुधार के विचारों से प्रभावित हुए-6। इस दौर में उन्होंने जमींदारी शोषण (*प्रेमाश्रम*), दहेज प्रथा (*निर्मला*), और गरीबी जैसे मुद्दों पर लिखा। हालाँकि, बाद में

वे गांधीवादी विचारों से कुछ हद तक विमुख भी हुए, विशेषकर औद्योगीकरण के प्रति गांधी के दृष्टिकोण से-1।

तीसरा और अंतिम चरण प्रगतिशील यथार्थवाद का है। 1936 में प्रेमचंद को प्रगतिशील लेखक संघ (Progressive Writers' Association) का प्रथम अध्यक्ष चुना गया-1। यह उनके लेखन में मार्क्सवादी विचारधारा के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक था। इस दौर में रचित *गोदान* (1936) और *कफ़न* (1936) जैसी रचनाएँ वर्ग-संघर्ष और आर्थिक विषमता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

प्रेमचंद ने साहित्य के उद्देश्य पर स्वयं लिखा:

> "साहित्य का उद्देश्य समाज के दर्पण के रूप में कार्य करना नहीं है, बल्कि उन ताकतों को उजागर करना है जो समाज को गतिशील बनाती हैं।"

यह कथन उनके 'सामाजिक यथार्थवाद' को समझने की कुंजी है–वे केवल 'जैसा है' वैसा नहीं दिखाना चाहते थे, बल्कि 'जैसा होना चाहिए' के लिए चेतना जागृत करना चाहते थे। एमिली डरहम ने अपने शोध में इस बात पर जोर दिया है कि प्रेमचंद का प्रगतिशील यथार्थवाद 'उन सामाजिक वास्तविकताओं को मुद्रित रूप में लेकर आया जो पहले कभी अभिव्यक्त नहीं हुई थीं'-2।

2. जाति और उत्पीड़न: दलित चेतना के आख्यान

प्रेमचंद की कहानियों में जाति-व्यवस्था का चित्रण सबसे विवादास्पद और विश्लेषित विषयों में से एक है। एक ओर उन पर यह आरोप लगता है कि उन्होंने दलितों को निष्क्रिय, पराजित और आत्मग्लानि से ग्रस्त प्रस्तुत किया; दूसरी ओर उन्हें हिंदी साहित्य का पहला ऐसा लेखक माना जाता है जिसने दलित दृष्टिकोण से सामाजिक संरचनाओं पर प्रश्न उठाए। यह द्वंद्व ही प्रेमचंद के जाति-चित्रण की जटिलता को रेखांकित करता है।

2.1 *सद्गति* और *कफ़न* में पराजय की त्रासदी

सद्गति (Deliverance) प्रेमचंद की सबसे चर्चित कहानियों में से एक है। दलित दुखी, जो नाम से ही 'दुखी' है, पंडित घसीराम से काम मांगने आता है। भूख से व्याकुल और काम के बोझ से त्रस्त दुखी पंडित जी के यहाँ लकड़ी काटते-काटते गिर जाता है और मर जाता है। कहानी के अंतिम वाक्यों में प्रेमचंद लिखते हैं:

> "खेत में गीदड़ और चील, कुत्ते और कौवे दुखी का शव नोच रहे थे। यह था उसके जीवन भर की भक्ति, सेवा और विश्वास का पुरस्कार।"-1

दुखी का कोई विद्रोह नहीं है, कोई प्रश्न नहीं है। वह इस व्यवस्था में इतना गहरे तक समा चुका है कि ब्राह्मण की अवहेलना की कल्पना भी उसके लिए असंभव है। यह चरित्र-चित्रण दलित आलोचकों के लिए एक समस्या रहा है–क्या प्रेमचंद ने यहाँ दलितों को रूढ़िवादी ढांचे में ही कैद कर दिया?

कफ़न (The Shroud) इसी प्रश्न को और अधिक जटिल बनाती है। घीसू और माधव, दो दलित चरित्र, माधव की पत्नी की मृत्यु पर कफन के लिए एकत्रित धन को शराब पीने में उड़ा देते हैं। प्रथम दृष्टया ये दोनों 'आलसी' और 'असंवेदनशील' लगते हैं। लेकिन गहराई से देखें तो यह कहानी दलितों के श्रम से अलगाव (alienation) की कहानी है–जब समाज आपको मानवीय गरिमा से वंचित कर देता है, तो उस व्यवस्था के प्रति सार्थक कार्य करने की प्रेरणा भी समाप्त हो जाती है। गुप्ता सुरेंद्र कुमार के अनुसार, प्रेमचंद ने यहाँ 'पीड़ा की सीमा लांघने पर होने वाले प्राकृतिक मानवीय व्यवहार' को दिखाया है-3।

2.2 *ठाकुर का कुआँ* और *मंदिर* में प्रतिरोध के बीज

दलित चरित्रों की पूर्ण पराजय के चित्रण के साथ-साथ प्रेमचंद ने कुछ ऐसी कहानियाँ भी लिखीं जिनमें प्रतिरोध के बीज स्पष्ट दिखाई देते हैं। *ठाकुर का कुआँ* (Thakur's Well) में गंगी वह दलित महिला है जो अपने बीमार पति के लिए साफ पानी लाने हेतु ठाकुर के कुएँ का पानी लेने का साहस करती है। वह विद्रोही है, प्रश्न करने की क्षमता रखती है-1।

इससे भी अधिक सशक्त प्रतिरोध *मंदिर* (Temple) में दिखता है। सुखिया वह दलित महिला है जो अपने बीमार बच्चे को लेकर मंदिर के बाहर मर जाती है। मरने से पहले वह प्रश्न करती है–दलित मंदिर में क्यों नहीं जा सकते? क्या भगवान केवल 'उनके' (उच्च जातियों के) हैं?-1 सुखिया की मृत्यु मंदिर की सीढ़ियों पर ही होती है–प्रवेश से ठीक पहले। यह दृश्य भारतीय जाति-व्यवस्था की सबसे बड़ी विडंबना को दर्शाता है: शारीरिक और मानसिक रूप से तो दलित व्यवस्था के 'बाहर' हैं, लेकिन उनकी व्यथा-कथा व्यवस्था की सबसे बड़ी सच्चाई है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जी.एस. मीना के अनुसार:

> "प्रेमचंद ब्राह्मण के दृष्टिकोण से लिख सकते थे, लेकिन उन्होंने दलित दृष्टिकोण को चुना। उन्होंने लोगों को जाति-व्यवस्था की मूर्खताओं और इससे उपजे उत्पीड़न का एहसास कराया।"-1

2.3 *पूस की रात* और *शतरंज के खिलाड़ी* का व्यापक संदर्भ

जाति-चित्रण से हटकर प्रेमचंद की कुछ कहानियाँ मानवीय संवेदना और सामाजिक विडंबना के सार्वभौमिक प्रश्न उठाती हैं। *पूस की रात* में किसान हल्कू की ठंड से कराहती हुई रात एक ओर किसान की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण है, तो दूसरी ओर यह इस बात का प्रतीक है कि कैसे प्रकृति और सामाजिक व्यवस्था दोनों मिलकर उत्पीड़ित को कुचल देती हैं। *शतरंज के खिलाड़ी* (जो कहानी के अलावा सत्यजित रे की फिल्म का भी विषय बनी) में प्रेमचंद ने अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के पतन को शतरंज के खिलाड़ियों के संकीर्ण जगत के माध्यम से प्रस्तुत किया–यहाँ सामाजिक संदेश राष्ट्र के प्रति उदासीनता के खतरों के रूप में उभरता है।

एम. असदुद्दीन ने प्रेमचंद की जाति-संबंधी कहानियों के परिचय में लिखा है:

> "ये कहानियाँ प्रदर्शित करती हैं कि दलितों को उच्च जातियों के सदस्यों द्वारा दैनिक अपमान का सामना करना पड़ता था, और यह अपमान इस तथ्य से उपजा था कि दलित हीनता हिंदू उच्च जातियों के मानस में सदियों से गहरे तक रची-बसी थी, जिन्होंने दलितों के मौखिक और शारीरिक अपमान के लिए प्रतीकों, मुद्राओं और संकेतों का एक विशाल भंडार विकसित कर लिया था।"-1

3. पितृसत्ता और नारी अस्मिता: सीमाओं के भीतर स्वतंत्रता

प्रेमचंद के स्त्री-पात्र उनके युग के सापेक्ष क्रांतिकारी हैं, फिर भी आज के नारीवादी दृष्टिकोण से वे सीमित भी प्रतीत होते हैं। यह विरोधाभास उनके समय की सामाजिक वास्तविकताओं और उनकी अपनी सहानुभूति की सीमाओं दोनों को दर्शाता है।

3.1 परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में स्त्री

प्रेमचंद की अधिकांश नायिकाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच झूलती हैं। *बड़े घर की बेटी* में स्त्री त्याग और कर्तव्य की प्रतिमूर्ति है; *निर्मला* में दहेज प्रथा की शिकार नारी की त्रासदी

है; *गोदान* में झुनिया एक वेश्या है जिसमें गहरी मानवीय संवेदना है। प्रेमचंद के यहाँ स्त्री केवल 'पीड़िता' नहीं है, वह उस पीड़ा को सहने की शक्ति भी रखती है।

कृपा शांडिल्य ने अपने अध्ययन में *सेवासदन* (Sevasadan) का विश्लेषण करते हुए दिखाया है कि कैसे प्रेमचंद विवाह संस्था की आलोचना करते हैं और वेश्या के माध्यम से कामुकता, सम्मान और स्त्रीत्व के वैकल्पिक मॉडल का सुझाव देते हैं-8। हालाँकि, वे यह भी नोट करती हैं कि सुधारवादी और राष्ट्रवादी चिंताएँ स्त्री की कामुकता को पूर्णतः स्वतंत्र नहीं होने देतीं। प्रेमचंद 'हिंदू महिला' के बजाय 'भारतीय महिला' की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं, लेकिन यह नई पहचान उपन्यास के दायरे में पूरी तरह साकार नहीं हो पाती।

3.2 गंगी और सुखिया: दलित नारी का दोहरा शोषण

दलित नारी के चरित्र में प्रेमचंद ने जाति और पितृसत्ता के दोहरे शोषण को दिखाया है। *ठाकुर का कुआँ* की गंगी और *मंदिर* की सुखिया दोनों ही दलित हैं और स्त्री हैं–उनका संघर्ष इसलिए दोगुना कठिन है। गंगी केवल अपने पति की बीमारी के लिए पानी नहीं ला रही, वह एक ऐसी व्यवस्था को चुनौती दे रही है जो उसे मानवीय गरिमा से वंचित करती है। सुखिया मंदिर के बाहर मरती है–भगवान के घर के ठीक बाहर–जो इस बात का प्रतीक है कि दलित स्त्री के लिए न तो समाज में स्थान है और न ही आध्यात्मिक मुक्ति में।

टोरल गजरावाला का तर्क है कि प्रेमचंद की कहानियों में 'पीड़ित महिला' के प्रति पाठकीय सहानुभूति का मॉडल 'जाति प्रश्न' पर आसानी से लागू कर दिया गया-7-10। इस मॉडल की सीमा यह है कि यह सहानुभूति तो उत्पन्न करता है, लेकिन सामाजिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन का दबाव नहीं बनाता। पाठक दलित नारी के प्रति दुखी तो होता है, लेकिन 'करुणा' और 'एकजुटता' (solidarity) में अंतर यहीं है–करुणा निष्क्रिय है, एकजुटता सक्रिय।

4. आर्थिक विषमता और वर्ग-संघर्ष: गरीबी का यथार्थ

प्रेमचंद की कहानियों का सबसे मजबूत पक्ष उनका आर्थिक यथार्थवाद है। उन्होंने किसानों, मजदूरों, छोटे कारीगरों और भूमिहीनों की दुर्दशा को ऐसे चित्रित किया है जैसे वह स्वयं उस पीड़ा से गुजरे हों। उनकी दृष्टि में गरीबी केवल आर्थिक नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक अवस्था है।

4.1 किसान और जमींदार का द्वंद्व

प्रेमचंद ने जमींदारी व्यवस्था और किसानों के शोषण को अपनी कहानियों में बारीकी से उकेरा है। *किसान*, *मंत्र*, *ईदगाह* (जहाँ गरीब हामिद तीन पैसे में एक खिलौना न खरीदकर

अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है) जैसी कहानियाँ गरीबी के मानवीय चेहरे को दिखाती हैं। *दो बैलों की कथा* में हीरा और मोती नामक दो बैलों के माध्यम से प्रेमचंद ने मजदूर वर्ग के शोषण और प्रतिरोध की एक गहरी कथा लिखी है-5।

द इंडियन एक्सप्रेस के एक विश्लेषण के अनुसार:

> "'दो बैलों की कथा' केवल दो बैलों की कहानी नहीं है। यह भारत की ही कहानी है। प्रेमचंद ने उनके विद्रोह के माध्यम से राष्ट्रीय प्रतिरोध को आवाज दी। कहानी कोई नारा नहीं उठाती, लेकिन इसमें एक जागृत होते लोगों का गुस्सा सुनाई देता है।"-5

हीरा और मोती अपने स्वामी झूरी से प्रेम करते हैं, लेकिन जब उन्हें झूरी के ससुराल भेजा जाता है, तो वहाँ उनके साथ क्रूरता होती है। वे विद्रोह करते हैं, भागते हैं, और अंततः एक कसाई की दुकान से बच निकलते हैं। प्रेमचंद ने यह स्पष्ट किया है कि 'आज़ादी सबको चाहिए'–चाहे वह मनुष्य हो या पशु-5।

4.2 श्रम और अलगाव की मार्क्सवादी व्याख्या

प्रेमचंद के अंतिम दौर की रचनाएँ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। *कफ़न* में घीसू और माधव का 'आलस्य' वास्तव में एक ऐसी व्यवस्था के प्रति असहयोग है जिसने उनके श्रम को बेअर्थ कर दिया है। जब परिश्रम का कोई फल नहीं मिलता, तो परिश्रम करने की प्रेरणा समाप्त हो जाती है। यह मार्क्स के 'अलगाव' (alienation) के सिद्धांत की साहित्यिक अभिव्यक्ति है।

प्रेमचंद ने *रंगभूमि* (Rangabhumi) जैसे उपन्यासों में औद्योगीकरण के खतरों को भी दिखाया। उनका मानना था कि तीव्र औद्योगीकरण मजदूरों और किसानों के हितों के विरुद्ध होगा-6। यह दृष्टिकोण गांधीवादी और मार्क्सवादी दोनों परंपराओं से जुड़ता है–गांधी से स्वावलंबी ग्राम अर्थव्यवस्था का विचार और मार्क्स से पूंजीवाद की आलोचना।

4.3 *ईदगाह* और बाल मनोविज्ञान का सामाजिक संदेश

ईदगाह प्रेमचंद की सबसे मार्मिक कहानियों में से एक है। हामिद, एक अनाथ लड़का, ईद के अवसर पर तीन पैसे लेकर मेले में जाता है। सभी बच्चे खिलौने खरीदते हैं, लेकिन हामिद एक मजबूत चिमटा खरीदता है–अपनी दादी के जलने वाले हाथों की याद में। इस कहानी में प्रेमचंद ने दिखाया है कि गरीबी बच्चों को उनका बचपन तो छीन लेती है, लेकिन उनमें

एक अलग तरह की संवेदनशीलता विकसित करती है। हामिद का चिमटा गरीबी के खिलाफ एक प्रतीकात्मक हथियार है–वह अपनी दादी को जलन से बचाना चाहता है, लेकिन वह उस व्यवस्था को नहीं बदल सकता जो उन्हें गरीब बनाए रखती है।

5. प्रेमचंद की सीमाएँ: दलित आलोचना और उसके प्रश्न

प्रेमचंद की कहानियों के सामाजिक संदेश का मूल्यांकन करते समय दलित आलोचना के परिप्रेक्ष्य को अनदेखा करना अपूर्ण विश्लेषण होगा। यह आलोचना प्रेमचंद के युग और उनकी सामाजिक स्थिति से उपजती है, और हिंदी साहित्य में 'प्रतिनिधित्व' के प्रश्न को गहराई से उठाती है।

5.1 'पराजित दलित' की समस्या

प्रेमचंद पर सबसे गंभीर आरोप यह है कि उनके दलित पात्र अक्सर 'पराजित' होते हैं। *सद्गति* का दुखी मरता है, *कफ़न* का माधव और घीसू नैतिक रूप से पतित हैं, *पूस की रात* का हल्कू ठंड से कराहता है। दलित आलोचकों का प्रश्न है–क्या दलित केवल पीड़ित ही हो सकते हैं? क्या उनमें विद्रोह करने, प्रश्न करने, बदलने की क्षमता नहीं?

यह आरोप केवल प्रेमचंद के चरित्र-चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि उस 'पाठकीय समझौते' (readerly compact) तक जाता है जिस पर उनका सामाजिक यथार्थवाद आधारित है। गजरावाला के अनुसार, प्रेमचंद के यथार्थवाद में 'सहानुभूति का वह तंत्र काम करता है जो दलित पात्रों के लिए एक बंद क्षितिज (ontologically closed horizon) का निर्माण करता है'-7-10। दूसरे शब्दों में, पाठक दलित के प्रति जितना अधिक सहानुभूति रखता है, उतना ही वह यह मान लेता है कि दलित की दशा बदलनी असंभव है–जो वास्तव में एक रूढ़िवादी धारणा है।

5.2 'प्रतिनिधित्व' का संकट: क्या एक उच्च जाति का लेखक दलित की पीड़ा लिख सकता है?

यह प्रश्न केवल प्रेमचंद के लिए नहीं, बल्कि पूरे साहित्य जगत के लिए महत्वपूर्ण है। एंटोनियो ग्राम्सी के 'परंपरागत बुद्धिजीवी' और 'जैविक बुद्धिजीवी' के वर्गीकरण के अनुसार, प्रेमचंद एक 'परंपरागत बुद्धिजीवी' थे–वे आर्थिक संरचना से दूर थे और उनकी जानकारी अतीत के अभिलेखों से आती थी-1। जैविक बुद्धिजीवी, जैसे डॉ. भीमराव अंबेडकर, आर्थिक संरचना में गहरे धंसे होते हैं और मौजूदा ढांचे को उलटने की अधिक संभावना रखते हैं।

प्रोफेसर जी.एस. मीना इस आलोचना का उत्तर देते हुए कहते हैं:

> "साहित्य के हर कृति का मूल्यांकन उस समय के संदर्भ में किया जाना चाहिए जिसमें वह लिखी गई थी। प्रेमचंद ने उससे पहले लिखा जब भारत में दलित चेतना के आंदोलनों ने आकार लेना शुरू किया था। एक अर्थ में, उन्होंने साहित्य के लिए वही किया जो अंबेडकर ने राजनीति के लिए किया; बस उनके करने का तरीका अलग था, क्योंकि क्षेत्र अलग थे।"-1

यह तर्क महत्वपूर्ण है–प्रेमचंद ने एक ऐसे युग में लिखा जब दलित आवाज़ों को साहित्य में स्थान नहीं मिलता था। उन्होंने वह प्रश्न उठाए जो उस समय के लिए क्रांतिकारी थे। कि वे उन प्रश्नों को उस गहराई तक नहीं ले जा सके जितनी आज की दलित चेतना अपेक्षा करती है, यह उनकी व्यक्तिगत सीमा नहीं बल्कि उस युग की सामूहिक सीमा थी।

निष्कर्ष

प्रेमचंद की कहानियों का सामाजिक संदेश किसी एक सूत्र में बाँधना कठिन है। वह एक साथ कई स्तरों पर काम करता है–वह जाति के अन्याय को उजागर करता है, लेकिन दलित चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति तक नहीं पहुँच पाता; वह पितृसत्ता की आलोचना करता है, लेकिन स्त्री को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं दे पाता; वह गरीबी के खिलाफ आवाज उठाता है, लेकिन क्रांति के बजाय सुधार की राह सुझाता है।

फिर भी, प्रेमचंद का महत्व इस तथ्य में है कि उन्होंने हिंदी साहित्य को 'यथार्थ' से परिचित कराया। उनसे पहले कहानी मनोरंजन थी, उनके बाद वह चेतना का माध्यम बनी। उन्होंने उन लोगों को आवाज दी जिनकी आवाज सुनने की परंपरा ही नहीं थी–किसान, मजदूर, दलित, वेश्या, अनाथ बच्चे। यदि वह हर बात 'पूरी' नहीं कर सके, तो इसलिए कि एक अकेला लेखक सदियों के अन्याय को एक जीवनकाल में समाप्त नहीं कर सकता।

प्रेमचंद के सामाजिक संदेश की असली ताकत यह है कि वह पाठक को बेचैन करता है। *सद्गति* पढ़कर कोई उदासीन नहीं रह सकता। *कफ़न* पढ़कर कोई यह नहीं कह सकता कि 'गरीब अपनी बदकिस्मती के खुद जिम्मेदार हैं'। *दो बैलों की कथा* पढ़कर कोई श्रमिकों के शोषण के प्रति असंवेदनशील नहीं रह सकता। यह बेचैनी ही प्रेमचंद के साहित्य की सबसे बड़ी सामाजिक उपलब्धि है।

जैसा कि एक समीक्षक ने लिखा:

> "प्रेमचंद ने बुद्धिजीवियों के लिए नहीं लिखा। उन्होंने उस तरह से कहानियाँ कहीं जैसे बुजुर्ग नीम के पेड़ के नीचे कहा करते हैं। सरल, मापा हुआ, अविस्मरणीय।"-5

यही सादगी और सच्चाई उनके सामाजिक संदेश को आज भी प्रासंगिक बनाए रखती है। प्रेमचंद पढ़ने का अर्थ है केवल साहित्य पढ़ना नहीं, बल्कि समाज पढ़ना, अपने आप को पढ़ना, और उन प्रश्नों का सामना करना जिनसे हम अक्सर बचना चाहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. असदुद्दीन, एम. (2019). प्रेमचंद की जाति पर आधारित कहानियां। पेंगुइन रैंडम हाउस।डरहम, ई. (2018). जादू, पागलपन और कीचड़: प्रेमचंद, मंटो और चुगताई का प्रगतिशील यथार्थवाद (डॉक्टरेट शोध प्रबंध)। मिनेसोटा विश्वविद्यालय। https://hdl.handle.net/11299/202207
2. गजरावाला, टी. जे. (2012). अछूत कथाएं: साहित्यिक यथार्थवाद और जाति का संकट। फोर्डहम यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. गुप्ता, एस. के. (2012). प्रेमचंद की 'गोदान - एक गाय का उपहार' में जाति, लिंग और सत्ता की राजनीति का प्रतिनिधित्व। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोसोशल रिहैबिलिटेशन।
4. गुप्ता, एस. के. (2017). प्रेमचंद: एक समाज सुधारक और रचनात्मक विचारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोसोशल रिहैबिलिटेशन।
5. मीना, जी. एस. (2019). प्रेमचंद की जातिगत राजनीति पर साक्षात्कार। द प्रिंट।
6. मिश्रा, एस. (2025, 31 जुलाई)। 'यदि ईदगाह द्वार था, तो दो बैलों की कथा दर्पण थी': प्रेमचंद को श्रद्धांजलि। द इंडियन एक्सप्रेस।
7. शांडिल्य, के. (2016)। विधवा, पत्नी और वेश्या: प्रेमचंद के सेवा सदन में सामाजिक सुधार का तुलनात्मक अध्ययन। तुलनात्मक साहित्य अध्ययन, 53(2), 272-288। पेन स्टेट यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी। (दिनांक अज्ञात)। DENG203: वैकल्पिक अंग्रेजी चतुर्थ। एलपीयू दूरस्थ शिक्षा।
9. द प्रिंट। (2019, 7 अक्टूबर)। जातिगत संघर्ष और महिला सशक्तिकरण: प्रेमचंद की लघु कथाओं पर एक नज़र। द प्रिंट।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM